

जलवायु परिवर्तन वैश्विक संकट निवारण हेतु नवाचार कार्यक्रम

कुंवर पाण्डेय

ग्राम विकास अधिकारी, पंचायत समिति – रामगढ़, जिला – अलवर, राजस्थान

शोध सारांश

जलवायु परिवर्तन औसत मौसमी दशाओं के ऐतिहासिक रूप से बदलाव आने को सामान्यतः इन बदलावों का अध्ययन पृथ्वी के इतिहास को दीर्घ अवधियों में बाँट कर किया जाता है। जलवायु की दशाओं में यह बदलाव प्राकृतिक भी हो सकता है और मानव के क्रियाकलापों का परिणाम भी। ग्रीनहाउस प्रभाव और वैश्विक तापन को मनुष्य की क्रियाओं का परिणाम माना जा रहा है जो औद्योगिक क्रांति कार्बन डाई आक्साइड आदि गैसों के वायुमण्डल में अधिक मात्रा में बढ़ जाने का परिणाम है। जलवायु परिवर्तन के खतरों के बारे में वैज्ञानिक लगातार आगाह करते आ रहे हैं। प्रत्येक महाद्वीप के प्रत्येक देश में प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में जलवायु परिवर्तन से प्रभावित होगा। जलवायु संकट मंडरा रहा है और हम इस बात के लिए तैयार नहीं हैं कि इसका क्या मतलब हो सकता है जैसा कि हम जानते हैं, जलवायु परिवर्तन मानवीय गतिविधियों के कारण होता है और पृथ्वी पर जीवन के लिए खतरा है। बढ़ते ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के साथ, जलवायु परिवर्तन अनुमान से कहीं अधिक तेज़ गति से हो रहा है। इसके प्रभाव विनाशकारी हो सकते हैं और इसमें अत्यधिक और बदलते मौसम के पैटर्न और समुद्र के स्तर में वृद्धि शामिल है। यदि अनियंत्रित छोड़ दिया गया, तो जलवायु परिवर्तन पिछले वर्षों में हुई विकास प्रगति को नष्ट कर देगा। यह बड़े पैमाने पर पलायन को भी बढ़ावा देगा जिससे अस्थिरता और युद्ध होंगे। ग्लोबल वार्मिंग को पूर्व-औद्योगिक स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के लिए, उत्सर्जन पहले से ही कम होना चाहिए और 2030 तक लगभग आधा कटौती करने की आवश्यकता है, केवल सात साल दूर। लेकिन, हम इस लक्ष्य से काफी पीछे हैं। केवल योजनाओं और वादों से परे जाकर तत्काल और परिवर्तनकारी होना महत्वपूर्ण है। इसके लिए महत्वाकांक्षा बढ़ाने, संपूर्ण अर्थव्यवस्थाओं को कवर करने और जलवायु-लचीले विकास की ओर बढ़ने की आवश्यकता है, साथ ही शुद्ध-शून्य उत्सर्जन प्राप्त करने के लिए एक स्पष्ट मार्ग की रूपरेखा तैयार करने की आवश्यकता है। विनाशकारी परिणामों से बचने और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी भविष्य सुरक्षित करने के लिए तत्काल उपाय आवश्यक हैं।

मुख्य बिन्दु :- जलवायु तटस्थ नेटवर्क, दक्षिण एशिया हाइड्रोमेट फोरम, वायु गुणवत्ता प्रबंधन, जलवायु नवाचार चुनौती, जलवायु परिवर्तन संकट व संरक्षण कार्यक्रम एवं निष्कर्ष ।

परिचय :-

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक घटना है जो बड़े पैमाने पर शहरी जीवन को प्रभावित करती है। बढ़ते वैश्विक तापमान के कारण समुद्र का स्तर बढ़ जाता है, बाढ़, सूखा और तूफान जैसी चरम मौसमी घटनाओं की संख्या बढ़ जाती है और उष्णकटिबंधीय बीमारियों का प्रसार बढ़ जाता है। इन सभी का शहरों की बुनियादी सेवाओं, बुनियादी ढांचे, आवास, मानव आजीविका और स्वास्थ्य पर महंगा प्रभाव पड़ता है। साथ ही, शहर जलवायु परिवर्तन में प्रमुख योगदानकर्ता हैं, क्योंकि शहरी गतिविधियाँ ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का प्रमुख स्रोत हैं। अनुमान बताते हैं कि वैश्विक ब्2 उत्सर्जन के 75 प्रतिशत के लिए शहर जिम्मेदार हैं, जिसमें परिवहन और इमारतें सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से हैं। वैश्विक, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर समन्वित दृष्टिकोण और कार्रवाई से ही सफलता प्राप्त की जा सकती है। इसलिए, जलवायु परिवर्तन से लड़ने में शहरों को समाधान का एक अभिन्न अंग बनाना आवश्यक है। कई शहर पहले से ही औद्योगिक उत्सर्जन को सीमित करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों, स्वच्छ उत्पादन तकनीकों और विनियमों या प्रोत्साहनों का उपयोग करके बहुत कुछ कर रहे हैं। उत्सर्जन में कटौती से उद्योगों और परिवहन से होने वाले स्थानीय प्रदूषण में भी कमी आएगी, जिससे शहरी वायु गुणवत्ता और शहरवासियों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। साझेदारों के सहयोग से, यूएनईपी जागरूकता बढ़ाने, कार्यशालाओं और प्रशिक्षणों का आयोजन करने, मूल्यांकन उपकरण विकसित करने और जलवायु परिवर्तन पर अंतरराष्ट्रीय बैठकों में शहरों को शामिल करके राष्ट्रीय और स्थानीय सरकारों की सहायता करता है। इन सहयोगों में से एक शहरों और जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने के लिए सिटीज़ अलायंस की सुविधाजनक भूमिका के तहत यूएनईपी, विश्व बैंक, यूएन-हैबिटेट के बीच एक संयुक्त कार्य कार्यक्रम है। विकासशील देशों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, इस साझेदारी का उद्देश्य शहरी अनुकूलन और शमन प्रक्रियाओं में स्थानीय और राष्ट्रीय सरकारों का समर्थन करना है। इस सहयोग का एक मुख्य परिणाम एक ऑनलाइन ज्ञान केंद्र है जो शहरों और जलवायु परिवर्तन पर जानकारी प्रदान करता है ।

उद्देश्य :-

- 1 जलवायु परिवर्तन की वैश्विक समस्या का अध्ययन करना ।
- 2 जलवायु परिवर्तन संकट निवारण हेतु कार्यक्रमों का विश्लेषण करना ।

परिकल्पना :-

वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन नवाचार हेतु सफल प्रयास किये जा रहे हैं ।

आँकड़ों का स्रोत :-

प्रस्तुत शोध में द्वितीयक सूचना प्रयोग की गई है जिसके अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का समावेश किया गया है ।

जलवायु तटस्थ नेटवर्क :-

जलवायु तटस्थ नेटवर्क के सदस्य के रूप में, जो 19 भागीदार शहरों और कई संगठनों को एक साथ लाता है, यूएनईपी पर्यावरणीय मुद्दों पर अपनी विशेषज्ञता प्रदान करता है। नेटवर्क का उद्देश्य कम उत्सर्जन और अंततः जलवायु तटस्थ समाज में बदलाव करना है। इसके अलावा न्छम्ब के प्रारंभिक चेतावनी और मूल्यांकन प्रभाग (वॉ) द्वारा संचालित पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन आउटलुक (म्ब) परियोजना एक वैश्विक पद्धति प्रदान करती है जो उप-क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर के अधिकारियों को जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन के लिए भेद्यता और प्रभाव आकलन करने में सक्षम बनाती है। जलवायु परिवर्तन के प्रति एशिया लचीलेपन का कार्यक्रम (चाल्ब) यूनाइटेड किंगडम के विदेश, राष्ट्रमंडल और विकास कार्यालय द्वारा समर्थित और विश्व बैंक द्वारा प्रशासित एक ट्रस्ट फंड है। चाल्ब फरवरी 2023 में बंद हो गया और किया गया कार्य नए रेजिलिएंट एशिया प्रोग्राम के तहत जारी रहेगा। चाल्ब को विश्लेषण के माध्यम से जलवायु परिवर्तन पर क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देकर एशिया के देशों में आपदा और जलवायु लचीलेपन को मजबूत करने के लिए 2018 में लॉन्च किया गया था; क्षमता निर्माण, प्रशिक्षण और संवाद; देशों की पूर्वानुमान और निर्णय लेने की क्षमताओं में सुधार; और कमजोर समुदायों को उपयोगी मौसम और जलवायु सूचना सेवाएं प्रदान करने के लिए नवाचार का समर्थन करना। ट्रस्ट फंड यूके के व्यापक कार्यक्रम, बदलते जलवायु कार्यक्रम के लिए एशिया क्षेत्रीय लचीलापन का हिस्सा है, जो यूके मौसम कार्यालय के साथ मिलकर काम करता है ।

दक्षिण एशिया हाइड्रोमेट फोरम :-

दक्षिण एशिया हाइड्रोमेट फोरम (एसएचएफ) दक्षिण एशिया में हाइड्रोमेट, प्रारंभिक चेतावनी और जलवायु सेवाओं में सुधार की दिशा में क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय स्तरों पर सहयोग को बढ़ावा देने और क्षमता बढ़ाने के लिए क्षेत्रीय भागीदारी का समर्थन करता है। इस क्षेत्रीय जुड़ाव के तीन मुख्य स्तंभ हैं: प) क्षेत्रीय संवाद और ज्ञान साझा करना; पप) क्षेत्रीय प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण गतिविधियाँ, और पपप) क्षेत्रीय जुड़ाव के साथ संरेखित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर की तकनीकी सहायता। 2018 से तीन¹ 19 आयोजित किए गए हैं, जिससे² 19 कार्यकारी परिषद का गठन हुआ, जिसमें सभी आठ देशों का प्रतिनिधित्व है, और एक साप्ताहिक पूर्वानुमानकर्ता फोरम है, जो मौसम और जलवायु से संबंधित जानकारी पर सहयोग करने के लिए तकनीकी विशेषज्ञों और निर्णय निर्माताओं को एक साथ लाता है। .

वायु गुणवत्ता प्रबंधन :-

वायु प्रदूषण दक्षिण एशिया में लंबी दूरी तय करता है और बड़े "एयरशेड" में फंस जाता है जो जलवायु विज्ञान और भूगोल से आकार लेते हैं। चाल्ब समर्थित फ्लैगशिप रिपोर्ट स्ट्राइविंग फॉर क्लीन एयर क्षेत्र में छह प्रमुख एयरशेड की पहचान करती है, देशों के बीच नीति कार्यान्वयन और सहयोग की विभिन्न डिग्री के साथ वायु प्रदूषण को कम करने के लिए चार परिदृश्यों का विश्लेषण करती है, और एयरशेड-व्यापी वायु गुणवत्ता प्रबंधन के लिए एक रोडमैप पेश करती है। कार्यक्रम ने ग्रीनहाउस गैस-वायु प्रदूषण इंटरैक्शन और सिनर्जीज या गेन टूल का भी समर्थन किया और शहर-दर-शहर दृष्टिकोण से अधिक प्रभावशाली और व्यापक एयरशेड के लिए वायु गुणवत्ता प्रबंधन के लिए भारत में राष्ट्रीय कार्यक्रमों के फोकस में बदलाव को प्रभावित करने के लिए हितधारकों को बुलाया।

जलवायु नवाचार चुनौती :-

एशियाई आपदा तैयारी केंद्र के सहयोग से कार्यान्वित क्लाइमेट इनोवेशन चैलेंज (सीआईसी), दक्षिण एशिया में जलवायु परिवर्तन के खतरे के खिलाफ समुदायों की लचीलापन बनाने के लिए 16 नवीन और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों का समर्थन कर रहा है। इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) और डीप-लर्निंग मॉडल से लेकर स्वचालित भूमि-उपयोग, स्मार्ट खेती और जलवायु सूचना और विश्लेषण के लिए डिजिटल सिस्टम तक, विजेता समाधानों का लक्ष्य लक्षित देशों के कृषि, जल सहित सबसे कमजोर क्षेत्रों की जरूरतों को पूरा करना है। और परिवहन.

लचीलेपन के लिए टेकइमर्ज :-

भारत में टेकइमर्ज रेजिलिएंस प्रोग्राम विश्व बैंक, आईएफसी, उपभोक्ता प्रौद्योगिकी संघ और भारत सरकार के राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) की साझेदारी है। सुदूर समुदायों तक सूचना की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ड्रोन, प्वज, साथ ही वाईफाई से जुड़े रेडियो का लाभ उठाते हुए, बटपू-19 के समय में आपदा लचीलेपन को मजबूत करने के लिए सात पायलट कार्य चल रहे हैं। दुनिया भर में 300 से अधिक आवेदकों के क्षेत्र से प्रतिस्पर्धात्मक रूप से चुने गए इनोवेटर्स राष्ट्रीय, राज्य और जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (डीएमए) के साथ साझेदारी में फील्ड परीक्षण कर रहे हैं।

जलवायु-स्मार्ट कृषि पद्धतियों और निवेश के बिना, जिम्बाब्वे का कृषि क्षेत्र तेजी से गिरावट की ओर जा सकता है।

व्यापक आर्थिक नीति के लिए जलवायु मॉडलिंग :-

जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन के प्रभाव तेजी से स्पष्ट होते जा रहे हैं, जलवायु-जागरूक नीतियों के डिजाइन और कार्यान्वयन ने व्यापक आर्थिक नीति बहस में अधिक केंद्रीय भूमिका ग्रहण कर ली है। इसके साथ ही आर्थिक नीति निर्माण में जलवायु को शामिल करने के महत्व की बढ़ती मान्यता आई है। जलवायु-लचीली नीति निर्धारण के लिए दो मैक्रोफिस्कल मॉडल, पाकमॉड और मैनेज-सीजीई को पाकिस्तान के वित्त मंत्रालय, मैक्रो-फिस्कल यूनिट (एमएफयू) में विकसित और एकीकृत किया गया था।

नीली अर्थव्यवस्था :-

हाल में समर्थित गतिविधियों ने मछुआरों और उनके आश्रित तटीय मछली पकड़ने वाले समुदायों की जलवायु और आपदा जोखिमों के प्रति लचीलापन बढ़ाने के लिए क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा दिया। चल रहे बैंक संचालन के तहत प्रौद्योगिकी नवाचार निवेश पर निर्माण करते हुए, इसने मौसम की चेतावनी में सुधार के लिए अत्याधुनिक तकनीकी समाधान अपनाने और छोटे पैमाने के कारीगर और अर्ध-औद्योगिक तटीय मत्स्य पालन के लिए समुद्र में खोज और बचाव पर दक्षिण-दक्षिण ज्ञान के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान की। इसने संयुक्त मछली पकड़ने वाले जहाज की निगरानी और बचाव के रूप में खोज की सुविधा के साथ-साथ मछली पकड़ने के गियर के मलबे और प्लास्टिक प्रदूषण की निगरानी और कमी के लिए अंतर-एजेंसी/अंतर-सरकारी संवाद और सूचना साझाकरण प्रोटोकॉल और समझौतों को शुरू करने के लिए क्षेत्रीय साझेदारों की स्थापना की। यह मालदीव पर विशेष ध्यान देने के साथ, दक्षिण एशिया में मत्स्य पालन और संबंधित गतिविधियों में शामिल घरेलू महिला श्रमिकों और उद्यमियों के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का भी समर्थन कर रहा है।

जलवायु परिवर्तन संकट :-

जलवायु संकट लगातार जारी है क्योंकि वैश्विक समुदाय इसे उलटने के लिए आवश्यक पूर्ण प्रतिबद्धता से दूर जा रहा है। 2010 – 2019 अब तक का सबसे गर्म दशक दर्ज किया गया, जो अपने साथ पूरे महाद्वीपों में बड़े पैमाने पर जंगल की आग, तूफान, सूखा, बाढ़ और अन्य जलवायु आपदाएँ लेकर आया।

जलवायु परिवर्तन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं को बाधित कर रहा है और विशेष रूप से सबसे कमजोर लोगों के जीवन और आजीविका को प्रभावित कर रहा है।

2010 और 2020 के बीच, अत्यधिक संवेदनशील क्षेत्रों, जहां लगभग 3.3–3.6 बिलियन लोग रहते हैं, ने बहुत कम भेद्यता वाले क्षेत्रों की तुलना में बाढ़, सूखे और तूफान से 15 गुना अधिक मानव मृत्यु दर का अनुभव किया।

यदि आप कार्रवाई नहीं करेंगे तो क्या होगा :-

यदि अनियंत्रित छोड़ दिया गया, तो जलवायु परिवर्तन के कारण औसत वैश्विक तापमान 3 डिग्री सेल्सियस से अधिक बढ़ जाएगा, और हर पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। पहले से ही, हम देख रहे हैं कि कैसे जलवायु परिवर्तन तूफानों और आपदाओं और भोजन और पानी की कमी जैसे खतरों को बढ़ा सकता है, जिससे संघर्ष हो सकता है। कुछ न करने पर हमें अभी कार्रवाई करने की तुलना में बहुत अधिक कीमत चुकानी पड़ेगी।

समस्या का समाधान व कार्यक्रम :-

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए हमें सभी स्तरों पर अपनी महत्वाकांक्षाओं को व्यापक स्तर पर बढ़ाना होगा। दुनिया भर में बहुत कुछ हो रहा है – नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश बढ़ गया है। लेकिन और भी बहुत कुछ करने की जरूरत है। दुनिया को अपनी ऊर्जा, उद्योग, परिवहन, भोजन, कृषि और वानिकी प्रणालियों को बदलना होगा ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हम वैश्विक तापमान वृद्धि को 2 डिग्री सेल्सियस, शायद 1.5 डिग्री सेल्सियस से भी नीचे सीमित कर सकें। दिसंबर 2015 में, दुनिया ने पेरिस समझौते को अपनाकर एक महत्वपूर्ण पहला कदम उठाया, जिसमें सभी देशों ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए कार्रवाई करने की प्रतिबद्धता जताई। हालाँकि, लक्ष्यों को पूरा करने के लिए और अधिक कार्रवाइयों की सख्त जरूरत है।

व्यवसायों और निवेशकों को यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि उत्सर्जन कम हो, सिर्फ इसलिए नहीं कि ऐसा करना सही चीज है, बल्कि इसलिए कि यह आर्थिक और व्यावसायिक दृष्टि से भी उपयुक्त है।

क्या हम जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए पर्याप्त निवेश कर रहे हैं :-

यूएनएफसीसीसी के अनुसार, वैश्विक जलवायु वित्त प्रवाह 2019-2020 में वार्षिक औसत +803 बिलियन तक पहुंच गया, जो पिछले वर्षों की तुलना में 12 प्रतिशत की वृद्धि है। हालाँकि, यह अभी भी वार्मिंग को सीमित करने के लिए आवश्यक स्तरों से कम है, और जीवाश्म-ईंधन से संबंधित प्रवाह 2020 में अनुकूलन और शमन के लिए जलवायु वित्तपोषण से अधिक हो गया है।

2019 में, 153 विकासशील देशों में से कम से कम 120 देशों ने जलवायु अनुकूलन और लचीलापन बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय अनुकूलन योजनाएँ बनाने और लागू करने के लिए गतिविधियाँ शुरू की थीं, जो पिछले वर्ष की तुलना में 29 देशों की वृद्धि है। इसके अलावा, 2020 आपदा जोखिम न्यूनीकरण लक्ष्य को पूरा करने में प्रगति धीमी रही है।

क्लाइमेट एक्शन समिट 2019

वैश्विक उत्सर्जन रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच रहा है और चरम पर पहुंचने का कोई संकेत नहीं दिख रहा है, संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने सभी नेताओं से 23 सितंबर 2019 को जलवायु कार्रवाई शिखर सम्मेलन के लिए टोस, यथार्थवादी योजनाओं के साथ अपने राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान को बढ़ाने के लिए न्यूयॉर्क आने का आह्वान किया। 2020, अगले दशक में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को 45 प्रतिशत तक कम करने और 2050 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन के अनुरूप।

आईपीसीसी जलवायु रिपोर्ट 2022

कार्य समूह प् रिपोर्ट जलवायु परिवर्तन शमन प्रगति और प्रतिज्ञाओं का एक अद्यतन वैश्विक मूल्यांकन प्रदान करती है, और वैश्विक उत्सर्जन के स्रोतों की जांच करती है। यह उत्सर्जन में कमी और शमन प्रयासों में विकास की व्याख्या करता है, दीर्घकालिक उत्सर्जन लक्ष्यों के संबंध में राष्ट्रीय जलवायु प्रतिज्ञाओं के प्रभाव का आकलन करता है।

जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौता :-

ऐतिहासिक पेरिस समझौता देशों को इस शताब्दी में वैश्विक तापमान वृद्धि को 2 डिग्री सेल्सियस से काफी नीचे रखकर जलवायु परिवर्तन के खतरे के प्रति वैश्विक प्रतिक्रिया को मजबूत करने और तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के प्रयासों को आगे बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है। यह 4 नवंबर 2016 को लागू हुआ।

संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने की दिशा में कार्रवाई करने के लिए सभी हितधारकों को प्रोत्साहित करना जारी रखता है।

COP27% मिस्र, 2022

6 से 18 नवंबर तक, राज्य के प्रमुख, मंत्री और वार्ताकार, जलवायु कार्यकर्ताओं, महापौरों, नागरिक समाज के प्रतिनिधियों और सीईओ के साथ जलवायु कार्रवाई पर सबसे बड़ी वार्षिक सभा के लिए मिस्र के तटीय शहर शर्म अल-शेख में मिलेंगे।

जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन के लिए पार्टियों का 27वां सम्मेलन – ब्च्27 – जलवायु आपातकाल से निपटने के लिए महत्वपूर्ण मुद्दों की एक श्रृंखला पर कार्रवाई करने के लिए ब्च्26 के परिणामों पर आधारित होगा – ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को तत्काल कम करने, लचीलापन बनाने से लेकर जलवायु परिवर्तन के अपरिहार्य प्रभावों को अपनाना, विकासशील देशों में जलवायु कार्रवाई को वित्तपोषित करने की प्रतिबद्धताओं को पूरा करना।

COP26% ग्लासगो, 2021

ग्लासगो में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (ब्च्26) में 120 विश्व नेता और 40,000 से अधिक पंजीकृत प्रतिभागी शामिल हुए, जिनमें 22,274 पार्टी प्रतिनिधि, 14,124 पर्यवेक्षक और 3,886 मीडिया प्रतिनिधि शामिल थे। दो सप्ताह तक, दुनिया जलवायु परिवर्तन के सभी पहलुओं – विज्ञान, समाधान, कार्य करने की राजनीतिक इच्छाशक्ति और कार्रवाई के स्पष्ट संकेतों पर केंद्रित रही।

ब्च्26 का परिणाम – ग्लासगो जलवायु समझौता – दो सप्ताह के दौरान लगभग 200 देशों के बीच गहन बातचीत, कई महीनों के कठिन औपचारिक और अनौपचारिक काम और व्यक्तिगत रूप से और वस्तुतः लगभग दो वर्षों तक निरंतर जुड़ाव का परिणाम है।

COP25% मैड्रिड, 2019

मैड्रिड जलवायु परिवर्तन सम्मेलन – ब्च्25 – ने पेरिस समझौते के कार्यान्वयन को मजबूत करने के तरीकों पर विचार करने के लिए दुनिया को एक साथ लाया। मैड्रिड में 2 से 16 दिसंबर तक होने वाला यह सम्मेलन ऐसे समय में आया है जब नए आंकड़ों से पता चलता है कि जलवायु आपातकाल हर दिन बदतर होता जा रहा है, और हर जगह लोगों के जीवन को प्रभावित कर रहा है, चाहे वह अत्यधिक गर्मी हो, वायु प्रदूषण हो, जंगल की आग हो, तीव्र बाढ़ हो या सूखा हो। . सम्मेलन से हमारे ब्लॉग यहां पढ़ें ।

COP24% कटोविस, 2018

ब्च्24 के अंत में, देशों ने "सभी पक्षों द्वारा उच्चतम संभव शमन और अनुकूलन प्रयासों को सुनिश्चित करने के लिए बढ़ी हुई महत्वाकांक्षा की तात्कालिकता" पर जोर दिया और ऐतिहासिक 2015 पेरिस जलवायु परिवर्तन समझौते को लागू करने के लिए दिशानिर्देशों के एक सेट पर सहमति व्यक्त की।

COP23% बॉन, 2017

2017 संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन 6-18 नवंबर तक जर्मनी के बॉन में हुआ। राष्ट्रीय सरकारों, शहरों, राज्यों, व्यापार, निवेशकों, गैर सरकारी संगठनों और नागरिक समाज के नेता पेरिस जलवायु परिवर्तन समझौते के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए जलवायु कार्रवाई में तेजी लाने के लिए एकत्र हुए।

COP22% मराकेश, 2016

यूएनएफसीसीसी में पार्टियों के सम्मेलन (सीओपी 22) का 22वां सत्र मराकेश, मोरक्को में हुआ। सीओपी 22 के दौरान, पार्टियों ने पेरिस समझौते को लागू करने और जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने वाले समझौते को लागू करने के लिए कार्यों को प्रोत्साहित करने की तैयारी शुरू कर दी।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की-मून ने अन्य देशों को सार्वजनिक रूप से प्रतिबद्ध होने का अवसर प्रदान करने के लिए 21 सितंबर को न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में एक विशेष "जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौते के लागू होने पर उच्च स्तरीय कार्यक्रम" बुलाया। 2016 के अंत से पहले पेरिस समझौते में शामिल होने के लिए।

पेरिस समझौते पर हस्ताक्षर समारोह, 22 अप्रैल 2016

जलवायु परिवर्तन पर वैश्विक ध्यान केंद्रित रखने और पेरिस से मजबूत राजनीतिक गति का निर्माण करने के लिए, संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून ने संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में एक विशेष समारोह में सभी देशों के प्रतिनिधियों को जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए आमंत्रित किया।

COP21] 12 दिसंबर 2015

पेरिस समझौते को 12 दिसंबर 2015 को पेरिस में ब्च्21 में जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन के सभी 196 दलों द्वारा अपनाया गया था। समझौते में, सभी देश वैश्विक तापमान वृद्धि को 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे सीमित करने के लिए काम करने पर सहमत हुए, और दिए गए 1.5 डिग्री सेल्सियस के लिए प्रयास करना गंभीर जोखिम है। सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पेरिस समझौते का कार्यान्वयन आवश्यक है, और यह जलवायु कार्यों के लिए एक रोडमैप प्रदान करता है जो उत्सर्जन को कम करेगा और जलवायु लचीलेपन का निर्माण करेगा।

निष्कर्ष :-

जलवायु प्रलय के मंडराने के साथ, वर्तमान जलवायु कार्य योजनाओं की गति और पैमाने जलवायु परिवर्तन से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए पूरी तरह अपर्याप्त हैं। लगातार और तीव्र चरम मौसम की घटनाएं पहले से ही पृथ्वी के हर क्षेत्र को प्रभावित कर रही हैं। बढ़ता तापमान इन खतरों को और बढ़ा देगा, जिससे गंभीर खतरे पैदा होंगे। जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल (आईपीसीसी) इस बात पर जोर देता है कि ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन में गहरी, तीव्र और निरंतर कटौती सभी क्षेत्रों में आवश्यक है, जो अभी से शुरू होकर इस दशक तक जारी रहेगी। ग्लोबल वार्मिंग को पूर्व-औद्योगिक स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के लिए, उत्सर्जन पहले से ही कम होना चाहिए और 2030 तक लगभग आधा कटौती करने की आवश्यकता है, केवल सात साल दूर। केवल योजनाओं और वादों से परे जाकर, तत्काल और परिवर्तनकारी कार्रवाई महत्वपूर्ण है। इसके लिए महत्वाकांक्षा बढ़ाने, संपूर्ण अर्थव्यवस्थाओं को कवर करने और जलवायु-लचीले विकास की ओर बढ़ने की आवश्यकता है, साथ ही शुद्ध-शून्य उत्सर्जन प्राप्त करने के लिए एक स्पष्ट मार्ग की रूपरेखा तैयार करने की आवश्यकता है। समय समाप्त हो रहा है, और विनाशकारी परिणामों से बचने और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी भविष्य सुरक्षित करने के लिए तत्काल उपाय आवश्यक हैं।

सन्दर्भ सूची :-

1. Kasting] J- F-(Siefert] JL ¼2002½- PLife and the Evolution of Earth*s AtmosphereP- Science- 296 ¼45570½% 1066-8-
2. Mora] C- I-(Driese] S- G-(Colarusso] L- A- ¼1996½- PMiddle to Late Paleozoic Atmospheric CO2 Levels from Soil Carbonate and Organic MatterP- Science- 271 ¼45252½% 1105-1107-
3. Zachos] J- C-(Dickens] G- R- ¼2000½- PAn assessment of the biogeochemical feedback response to the climatic and chemical perturbations of the LPTMP- GFF- 122% 188-189- -
4. Speelman] E- N-(Van Kempen] M- M- L-(Barke] J-(Brinkhuis] H-(Reichart] G- J-(Smolders] A- J- P- (Roelofs] J- G- M-(Sangiorgi] F-(De Leeuw] J- W-(Lotter] A- F-(Sinninghe Damsté] J- S- ¼2009½- PThe Eocene Arctic Azolla bloom% Environmental conditions] productivity and carbon drawdownP- Geobiology- 7 ¼42½% 155-70-
5. Retallack] Gregory J- ¼2001½- PCenozoic EÜpansion of Grasslands and Climatic CoolingP- The Journal of Geology- 109 ¼4½% 407-426-
6. Dutton] Jan F-(Barron] Eric J- ¼1997½- PMiocene to present vegetation changes% A possible piece of the Cenozoic cooling puzzleP- Geology- 25% 39-
7. Brown] Dwayne(Cabbage] Michael(McCarthy] Leslie(Norton] Karen ¼20 January 2016½- PNASA] NOAA Analyses Reveal Record&Shattering Global Warm Temperatures in 2015P- NASA-

8. Petit] J- R-(Jouzel] J-(Raynaud] D-(Barkov] N- I-(Barnola] J-&M-(Basile] I-(Bender] M-(Chappellaz] J-(Davis] M-(Delaygue] G-(Delmotte] M-(Kotlyakov] V- M-(Legrand] M-(Lipenkov] V- Y-(Lorius] C-(Ritz] C-(Saltzman] E- ¼1999&06&03½- PClimate and atmospheric history of the past 420]000 years from the Vostok ice core] AntarcticaP- Nature- 399 ¼1½% 429–436-
9. Demenocal] P- B- ¼2001½- PCultural Responses to Climate Change During the Late HoloceneP ¼PDF½- Science ¼journal½- 292 ¼5517½% 667–673